अगस्त 2016 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनायें।

मार्गदर्शन : पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी
संयोजना : साध्वी कनकलता, साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

इस अंक में

सुख-दुःख जीवन दृष्टि से जुड़े है, साधनों से नहीं

प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वन्द्विता में आप मंजिल समझकर जहां पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, वहां पहुंचकर पायेंगे कि मंजिल और आगे है। इस प्रकार हर बार मंजिल पर पहुंचकर भी मंजिल हाथ नहीं आती, सिर्फ सिफर हाथ आता है।

03

मनुष्य होने का भाव आते ही संसार बचाने की सोच जन्म लेगी

जब हम सजातीय मानव के प्रति निर्मम और निर्दय होने में कोई झिझक नहीं महसूस करते, तो फिर पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि के प्रति करुणा और संवेदना का प्रश्न ही कहां रह जाता है।

06

जैन दर्शन के साथ विज्ञान की सहमति

वस्तु जगत् के ज्ञान में दर्शन और विज्ञान एक-दूसरे के पुष्टिकारक बनते रहे हैं। कुछ तथ्य विज्ञान पहले रखता है और दर्शन बाद में उसका संवाहक बन जाता है। कुछ तथ्य दर्शन की भूमिका पर उभरे पड़े हैं, विज्ञान उनकी सच्चाई का समर्थक बन जाता है।

08

एकाग्रता पर पाश्चात्य चिन्तन

किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त करना हो या किसी विषय में विशेष योग्यता प्राप्त करनी हो, मानसिक एकाग्रता के अभाव में पूर्णत्व को नहीं छुआ जा सकता है। सोहम् का जाप पूर्णरूप से सहयोगी होता है इसमें।

22

संत-वाणी

दया भाव हिरदै बसे, मुख में मीठे बैन,
वो ही ऊंचे जानिए, जाके नीचे नैन।

-संत सहजो बाई

बोध-कथा

बुद्धि पर तरस

काशी में एक बड़ा सेठ रहता था, लेकिन वह बहुत कंजूस था। एक बार उसने घर की रखवाली के लिए एक चौकीदार रखने का विचार बनाया। लेकिन जो आदमी मिलता वह उससे बहुत ज्यादा पैसे मांगता। एक दिन उसके पास एक आदमी आया। वह शरीफ, ईमानदार और ताकतवर था, लेकिन बुद्धि से थोड़ा कमजोर था। सेठ ने सोचा, चौकीदारी के लिए बुद्धिमान की जरूरत ही क्या है। उसने उसे रख लिया। एक दिन सेठ को बाहर जाना पड़ा। जिस दिन सेठ बाहर गया, संयोग से उसी रात उसके घर में चोर घुस गए। चौकीदार अकेला उनका मुकाबला नहीं कर सका, चोरों ने उसे बांध दिया। जब वे सारा सामान लूटकर जाने लगे तो चौकीदार बोला- ''भाई, तुमसे एक प्रार्थना है। जो सामान तुम ले जा रहा हो, वह सब सेठानी की लड़की का है। उसकी शादी होने वाली है और सेठानी ने बड़ी मेहनत से सारी खरीदारी की है। तुम लोग वह सामान छोड़ दो और उसके दाम के बराबर रुपये ले लो।' चोरों ने पूछा- 'रुपये

कहां है?' 'तिजोरी में।' चौकीदार ने कहा। चोरों ने तिजोरी तोड़कर रुपया भी लूट लिया। फिर रुपये और सामान लेकर जाने लगे तो चौकीदार ने कहा- 'सामान क्यों ले जा रहे हो? रुपये कम पड़े हों तो तहखाने से मोहरें भी ले लो।' उसने तहखाने में जाने का रास्ता भी बता दिया। चोर मोहरें लूटकर सामान सहित जाने लगे तो चौकीदार ने फिर कहा, 'भाइयो अब तो सामान छोड़ दो।' चोर उसकी मूर्खता पर हंसने लगे। सेठ लौटकर आया तो किस्सा सुनकर चौकीदार को मारने दौड़ा। तभी एक संत वहां पधारे। उन्होंने पूरी बात सुनी तो बोले, 'सेठ जी, इसमें चौकीदार का क्या दोष? उसने तो अपनी बुद्धि के अनुसार सही काम किया। तरस तो आपकी बुद्धि पर आता है कि आपने चौकीदार रखने में भी कंजूसी की।'

श्लोक

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।

भावार्थ- यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, बल्कि वह तो अवश्य कर्तव्य है, क्योंकि यज्ञ, दान और तप -ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान पुरुषों को (वह मनुष्य बुद्धिमान है, जो फल और आसक्ति को त्याग कर केवल भगवदर्थ कर्म करता है।) पवित्र करने वाले हैं।

सुख-दुःख जीवन दृष्टि से जुड़े है, साधनों से नहीं

पश्चिम का आधार रहा है प्रतिस्पर्धा किन्तु आज पूर्व का जीवन भी दिन-प्रतिदिन अधिक जटिल, अधिक तनाव और अशांति-ग्रस्त होता जा रहा है। इधर वैभव-समृद्धि बढ़ती जा रही है, उधर मानसिक तनाव और रुग्णता बढ़ती जा रही है। कारण एक ही है। पूरब अपनी जीवन-दृष्टि खोता जा रहा है। जीवन के प्रति उसकी आस्था खत्म होती जा रही है। जीवन का हर क्षेत्र सहयोग से नहीं, प्रतिस्पर्धा से जुड़ गया है। पश्चिम की इस प्रतिस्पर्धा- परक दृष्टि ने पूरब को भौतिक दृष्टि से समृद्ध चाहे बनाया हो, मानसिक दृष्टि से वह दरिद्र ही होता जा रहा है।

पूरब की दृष्टि है सहयोगमूलक, पश्चिम की दृष्टि है प्रतिस्पर्धामूलक। पूरब की समृद्धि का आधार रहा परस्पर सहयोग। पश्चिम ने समृद्धि का आधार प्रतिस्पर्धा को बनाया। 'कम्पिटीशन इज द लॉ ऑफ् प्रोस्पेरिटी'- यह पश्चिम का मोटो है। पूर्व और पश्चिम की दृष्टि में यही मौलिक अन्तर है। प्रतिस्पर्धा में दौड़ तो तेज होती है, पर पहुंचना कहीं नहीं होता है। प्रतिस्पर्धा में आप दौड़ते रहें उम्र-भर, पर पहुंचेंगे कहीं नहीं। क्योंकि वहां मंजिल होती ही नहीं। परस्पर प्यार और सहयोग में हर कदम पर मंजिल है।

प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वन्द्विता में आप मंजिल समझकर जहां पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, वहां पहुंचकर पायेंगे कि मंजिल और आगे है। इस प्रकार हर बार मंजिल पर पहुंचकर भी मंजिल हाथ नहीं आती, सिर्फ सिफर हाथ आता है। हर बार आप दौड़ में सर्वप्रथम आकर भी सबसे पीछे अपने को पाते हैं। लाओत्से के शब्दों में- दोज हू स्टेण्ड फर्स्ट, आर लास्ट, दोज हू स्टेण्ड लास्ट, आर फर्स्ट। इस दौड़ में जो प्रथम हैं, वे अन्तिम हो जाते हैं। दौड़ में जो अन्तिम हैं, वे प्रथम हो जाते हैं। क्योंकि यह गोलाकार है। इस गोलाकार दौड़ में घुमावदार मोड़ आते ही जो आगे होता है, वह पीछे हो जाता है और जो पीछे होता है, वह आगे हो जाता है। और दौड़ क्योंकि गोलाकार है, इसलिए इसका कहीं अन्त तो है ही नहीं। जिसे मंजिल मानकर आप दौड़ रहे हैं, वहां पहुंचते-पहुंचते मंजिल उतनी ही आगे और सरक जाती है।

हम अपनी जीवन-दृष्टि पा लें, सुख के साधन न भी हों। हम सुखमय होंगें। अगर जीवन-दृष्टि को खो दिया, दुःख ही दुःख हैं, चाहे सुख के सारे साधन उपलब्ध हों। महत्वपूर्ण जीवन-दृष्टि है, साधन नहीं। सुख-दुःख जीवन-दृष्टि से जुड़े हैं, साधनों से नहीं।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

○ रुचि आनंद

कोई तो खड़ा हो कबीर की तरह अपना घर जलाने को तैयार

आज देश-दुनिया और समाज में जो कुछ बुरा हो रहा है, उस पर अनेक सवालों का खड़ा हो जाना अनुचित नहीं है। लेकिन वे सवाल अपने सर्वांगीण उत्तर के लिए एक ऐतिहासिक विश्लेषण और तटस्थ जांच-पड़ताल मांगते हैं। खासकर हिंसा के मामले में। यहां भी एक प्रश्न उपजता है कि हिंसा के सामने अहिंसा को ढाल की तरह आगे कर देना भी क्या अतिक्रमण नहीं है। नकार पर खड़ी अहिंसा क्रमशः व्यक्तिपरक होती जाती है। यह अहिंसा समाज के लिए आदरणीय हो सकती है, आचरणीय नहीं।

अहिंसा-परंपरा के आदि प्रवर्तक हैं भगवान ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर हैं महावीर। अपने-अपने युग में इन महापुरुषों ने अपने अहिंसा-दीप्त धर्म-चक्र-प्रवर्तन से हिंसा-पीड़ित अराजक मानव समाज को एक युगांतरकारी मोड़ दिया था। ऋषभदेव समाज रचना के सूत्रधार हैं। उन्होंने असि, मसि और कृषि-व्यवस्था के द्वारा सामूहिक

दायित्व का प्रवर्तन किया। समाज संरचना की संपूर्ण परिकल्पना के पीछे उनका विराट अहिंसा दर्शन छुपा हुआ है। उनका सारा चिंतन एवं अभिक्रम समाज-सम्मुख है, विमुख नहीं।

भगवान महावीर की अहिंसा भी संपूर्ण तेजस्विता से समाज की भूमिका पर अवतरित हुई थी। व्यक्तिगत जीवन में तो वे अहिंसा-पुरुष थे ही, किंतु जहां कहीं भी वे हिंसा देखते, अहिंसा और अनुकंपा का सावन आंखों में लिए वहां पहुंच जाते। हिंसा, दास-प्रथा, जाति-दंभ, नारी-उत्पीड़न जैसी तत्कालीन असाध्य सामाजिक बीमारियों का इलाज वे अहिंसा के मार्ग से ही सफलतापूर्वक करते। यही काम महात्मा गांधी ने भी किया। गांधी के बाद जान जोखिम में डालने का साहस किसी ने भी नहीं किया। आज तो हिंसा का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने की होड़ प्रायः हर जगह लगी हुई है।

महावीर ने स्वतंत्रता तथा समानता के मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए एक सफल अहिंसात्मक क्रांति का सूत्रपात किया। एक उदाहरण पावापुरी का है, जहां सोमिल धनपति की ओर से विराट यज्ञ आयोजित किया गया था। चारों दिशाओं से अपार जन-समुदाय उसमें शामिल होने आया था। उन दिनों पशु-बलि का आम प्रचलन था। कहीं-कहीं नर-बलि की भी

प्रथा थी। महावीर को अहिंसा के सिंहनाद का यह एक सुनहरा मौका मिला था। वे वहां पहुंचे और निर्भय होकर अमृत वाणी से महायज्ञ का नेतृत्व करने वाले इंद्रभूति गौतम आदि ग्यारह महापंडितों का हृदय परिवर्तन किया। फिर उन्हीं पंडितों ने महावीर की अहिंसा-क्रांति की कमान को संभाला।

इस महान घटना को आज याद करने की जरूरत है। कोई तो खड़ा हो जो कबीर की तरह हाथ में लुकाठी लेकर पहले अपना घर जलाने के लिए तैयार हो जाए।

मनुष्य होने का भाव आते ही संसार बचाने की सोच जन्म लेगी

कहते हैं, एक बार भारत के तीन ताकतवर नेता स्वर्ग के अधिपति के बुलावे पर उनसे मिलने पहुंचे। अधिपति ने एक से बढ़कर एक एशो-आराम की उनकी सेवा में पेश कीं। उनका जयकारे के साथ दरबार में स्वागत किया गया। अधिपति ने कहा- 'आप तीनों अपने-अपने देश के ताकतवर नेता हैं, लोगों को आपसे बड़ी आशाएं हैं। हम चाहते हैं कि आप सब आम लोगों की कसौटी पर खरे उतरें। इसलिए हम आप तीनों को एक-एक वरदान देना चाहते हैं, जो इच्छा हो मांग लें।' मिस्टर 'ए' ने कहा, ऐसा वरदान दें कि 'बी' भिखमंगा हो जाए ताकि हमारे सामने वह

अस्तित्वहीन नजर आए। मिस्टर 'बी' ने मांगा कि देश से 'ए' का नामोनिशान मिट जाए ताकि हमारा विरोध ही समाप्त हो जाए। अंत में मिस्टर 'सी' से मागने के लिए कहा गया। उसने हंसते हुए कहा- 'माफ करें, मेरी अपनी कोई मांग नहीं है। बस इतना ही चाहता हूं कि इन दोनों की मांगों को तुरंत पूरा कर दिया जाए।'

यह प्रसंग पूरी तरह काल्पनिक है। लेकिन इसमें निहित अर्थ बिलकुल सही है। आज के समय की मानसिकता की सटीक झलक है इसमें। कोई भी अपने लिए नहीं, दूसरे को बर्बाद करने के लिए जी रहा है। हर कोई एक-दूसरे को निगल जाना चाहता है। एक विचार दूसरे विचार को, एक समुदाय दूसरे समुदाय को, एक मजहब दूसरे मजहब को फूटी आंखों से भी देखना नहीं चाहते। मंच पर तो बड़े जोरों से हाथ मिलाए जाते हैं, लेकिन नीचे उतरते ही जानी दुश्मन की शक्ल अख्तियार कर लेते हैं। इनमें तीसरा पक्ष हमेशा मुंह बाए खड़ा रहता है कि कब छींका टूटे और वह लपक ले।

इसी रुग्ण मानसिकता और फायदा-प्रधान संस्कृति से अराजकता का जन्म हुआ है। इसी से उन्माद बढ़ा है। छोटी से छोटी बात मनवाने और खुद को थोपने के लिए किसी भी सीमा तक जाने में परहेज नहीं हो रहा है, भले समाज और

देश का कितना भी नुकसान हो जाए। हर रोज यहां ऐसे मुद्दे की तलाश की जा रही है, जो दूसरों को नीचा दिखाने का काम आ सके। हम नैतिक तौर पर मशीनी सभ्यता से भी बदतर हालात में पहुंच गए हैं।

जब हम सजातीय मानव के प्रति निर्मम और निर्दय होने में कोई झिझक नहीं महसूस करते, तो फिर पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि के प्रति करुणा और संवेदना का प्रश्न ही कहां रह जाता है।

कोई बताए कि जिस माहौल को हम आज बैठे-बिठाए बुलावा दे रहे हैं, क्या वह महाविनाश को आमंत्रण नहीं है? हमें मनुष्यता के विनाश की नहीं, अपने आग्रहों को जीवित रखने की फिक्र है। सवाल है, जब इंसान ही नहीं बचेगा तो बाकी के रहने न रहने से फिर क्या होगा? जिस दिन हम में मनुष्य होने का भाव आ जाएगा, उसी दिन संसार को बचाने की सोच जन्म ले लेगी।

<u>संपूर्ण सृष्टि एक परिवार है</u>
<u>इसमें न कोई छोटा है न बड़ा</u>

मैने सुना है कि पर्यावरण अनुसंधान के संदर्भ में किसी देश में एक बार एक विशेष प्रयोग किया गया। इसके लिए लगभग दस किलोमीटर के जंगल को घेर दिया गया ताकि वहां का जीवन सहज ओर प्रकृति के अनुरूप रहे, इंसान का

हस्तक्षेप वहां नहीं हो। फिर उस जंगल से एक गिलहरी को हटा लिया गया। कुछ समय बाद देखा गया कि जंगल के जवीन का संतुलन गड़बड़ाने लगा। कुछ वैसा ही, जैसे विशाल सभागार के कोने से गुलदस्ता हटा देने से खालीपन छा जाता है। जंगल के पेड-पौधे, झाड़ियां, फल-फूल-पत्ते, नदी-नाले जैसे कह रहे हों कि हमारे परिवार का एक सदस्य हमसे बिछुड़ गया। शोधकर्ताओं ने उस गिलहरी को उसके पूर्व स्थान पर फिर रख दिया। उनको विचित्र अनुभव हुआ कि जंगल की रौनक वापस लौट आई।

दरअसल यह संपूर्ण सृष्टि अपने में एक परिवार है। एक जलकण से लेकर महासागर तक, रजकण से लेकर हिमालय और काकेशस की पर्वत-मालाओं तक, सूक्ष्मतम जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी तक। सबके सब इस सृष्टि परिवार के सदस्य हैं। इनमें न कोई छोटा है और न कोई बड़ा। सब एक-दूसरे के पूरक हैं। हर किसी की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। सबके अपने कार्यक्षेत्र हैं और उनकी अपनी कार्य-शैलियां और सामर्थ्य हैं। कवि इमर्सन ने इसी दर्शन को कविता की भाषा में कहा है, 'गिलहरी पहाड़ से कह रही है कि सबका प्रतिभा-बल अपना-अपना है। जो है, वह अच्छा है और बुद्धिसंगत है। मैं यदि अपनी पीठ पर जंगल नहीं उठा सकती तो तुम भी एक छोटा-सा अखरोट नहीं तोड़

सकते।'

यह स्थिति हर परिवार और देश व समाज की है। इसलिए कार्य-सामर्थ्य अपने को अहंकार से भरने के लिए नहीं, संपूर्णता को बरकरार रखने के लिए है। जितने भी जीव-जंतु हैं, ये सब सृष्टि-परिवार के सदस्य हैं। इन सब की अपनी उपयोगिता है। किसी को भी क्षुद्र या निरर्थक मानना उचित नहीं। सृष्टि-व्यवस्था में सबकी जरूरत होती है। यही बात मनुष्य-समाज पर भी लागू है। लेकिन हमारा जो अहं है, वह ऊंच-नीच, बड़ा-छोटा के भेद से निकल नहीं पा रहा है। यह एक तुच्छ अहंकार है जो असहयोग को प्रश्रय देता है। इससे मुक्त होकर हम सृष्टि का अध्ययन करें तो पाएंगे कि यह कितनी सुंदर है। हर प्राणी कितना अद्‌भुत और अनुपम है।

शायद इसी अनुभव से गुजरते हुए भगवान महावीर ने कहा था, 'परस्पर सहयोग, उपकार और पारस्परिक प्यार ही जीवधारियों का आधार है।' हम सब भी अनुभव की नजर से अगर समाज और सृष्टि को देखने लगेंगे तो इसका संपूर्ण अर्थ मिल जाएगा। फिर हर किसी की अर्थवत्ता हमारे समक्ष आने लगेगी और वह कितना मूल्यवान है, इसका बोध हमें होने लगेगा।

जैन दर्शन के साथ विज्ञान की सहमति

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

दर्शन और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। दर्शन का कार्य है प्रत्यक्ष द्रष्टाओं द्वारा दृष्ट और अनुभूत तथ्यों का प्रतिपादन। विज्ञान का कार्य है दर्शन के द्वारा प्रतिपादित तथ्यों की सच्चाई को प्रयोग के माध्यम से लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना।

दर्शन द्वारा प्रतिपादित तथ्यों पर विज्ञान ने सच्चाई की मोहर लगाकर दर्शन जगत् का बहुत बड़ा उपकार किया है।

वस्तु जगत् के ज्ञान में दर्शन और विज्ञान एक-दूसरे के पुष्टिकारक बनते रहे हैं। कुछ तथ्य विज्ञान पहले रखता है और दर्शन बाद में उसका संवाहक बन जाता है। कुछ तथ्य दर्शन की भूमिका पर उभरे पड़े हैं, विज्ञान उनकी सच्चाई का समर्थक बन जाता है।

वैसे देखा जाए तो दर्शन और विज्ञान दोनों ही एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। विज्ञान के पास सर्वव्यापी दृष्टि नहीं है। जितना उसकी प्रयोगशाला में खरा उतरता है, वही सही है। आगे-पीछे क्या होता है, यह स्वयं विज्ञान भी नहीं जानता।

दर्शन के पास ऋषि-मुनियों की सर्वव्यापी दृष्टि का सहारा तो रहा पर प्रयोगविधियां और फार्मूले नहीं रहे।

फलतः बताया कुछ गया और कालांतर में समझा कुछ गया। अतः कहीं-कहीं दर्शन-प्रतिपादित तथ्यों की सच्चाई खटाई में पड़ गई। दोनों की भलाई इसी में है कि अनाग्रह भाव से सत्य का ग्रहण होता रहे और वितथ का विसर्जन।

जैन दर्शन का द्रव्यानुयोग और चरण-करणानुयोग लगभग विज्ञान की प्रयोगशाला में खरे उत्तर चुके हैं। कथानुयोग इतिहार का विषय है।

गणितानुयोग का जहां तक प्रश्न है, दर्शन और विज्ञान के निष्कर्षों में कुछ विसंवाद आता है। हो सकता है दर्शन की प्रतिपादित पद्धति में त्रुटि आ गई हो या दर्शन के जो सांकेतिक शब्द थे, उनका आशय लुप्त हो गया हो। कुछ भी हो, ज्योतिष और गणित से सम्बन्धित तथ्य अभी विज्ञान से कम साम्य रखते हैं।

कुछ तथ्य जो दर्शन की कपोल-कल्पना माने जाने रहे हैं, आज विज्ञान ने उन तथ्यों को शत-प्रतिशत सत्य घोषित कर दिया है। उन तथ्यों में से कुछेक का विश्लेषण यहां दिया जाता है।

जैन दर्शन में काल-चक्र की आदि के यानी अवसर्पिणी के तीन पर्वों या आरों के व्यक्तियों का वर्णन इतना विचित्र मिलता है कि आज से युग में वे बातेंकपोल कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं लगती।

अवसर्पिणी के प्रथम तीन भागों के व्यक्तियों का

विश्लेषण करते हुए वहां बताया गया है कि पहले आरे के व्यक्तियों का आहार इतना स्वल्प मात्रा में होता था कि अरहर की दाल जितनी-सी वनस्पति खाते और वह भी तीन दिन के अन्तराल के बाद। दूसरे आरे के व्यक्ति उससे कुछ अधिक खाते और अन्तराल भी कम हो गया। वे बेर फल जितनी वनस्पति खाते, फिर दो दिन लंघन करते। तीसरे आरे वाले व्यक्ति आंवले के फल जितनी वनस्पति खाते और अंतराल भी घटकर एक दिन का हो गया। यानी एक दिन छोड़ एक दिन खाने लगे। इस तरह आहार की मात्रा बढ़ते-बढ़ते वर्तमान में जितनी भी है वह हमारे प्रत्यक्ष है।

यह बात वर्तमान युग में तर्कसंगत नहीं लगती कि एक व्यक्ति अरहर की दाल जितना-सा खाए और फिर तीन दिन खाने की आवश्यकता ही न पड़े। पर आज के वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने इस तथ्य को सिद्ध कर दिया कि अगर सारवान वस्तु स्वल्प मात्रा में भी खायी जाए तो उसका असर काफी समय तक रहता है।

आज एक बीमार व्यक्ति को जो आहार लेने की स्थिति में नहीं है, केवल इंजेक्शन्स और टेबलेट्स के द्वारा जीवित रखा जाता है।

कुछ ऐसे बिस्कुट और टेबलट्स बने हैं, जिनको खा लेने पर दो-दो दिन तक भूख नहीं लगती। यह सब क्या है? यह कोई जादू नहीं है। मात्र एक प्रक्रिया है। बहुत-सी वस्तुओं

का सारांश निकालकर उसे सूक्ष्म रूप में एकत्रित कर लिया जाता है। वह देखने में थोड़ा और छोटा दिखाई देता है। पर शक्ति बहुत गुना बढ़ जाती है। इस विधि को हम व्यवहार में भी देखते हैं कि एक व्यक्ति जो दूसरी कुछ भी वस्तु न ले तो उसे कम से कम एक किलों दूध अवश्य लेना पड़ता है, अन्यथा शक्ति-संन्तुलन नहीं रह सकता, और भूख भी शान्त नहीं होती। किन्तु दूध का मक्खन निकाल लिया जाए, तो उस पाव मक्खन से ही भूख शांत हो जाती है और शक्ति भी बनी रहती है।

मक्खन की जगह अगर कोई निस्सार वस्तु खायी जाए, तो दो-तीन किलो जितनी आवश्यक होती है। इससे स्पष्ट है कि जो वस्तु जितनी सारभूत होगी वह उतनी ही कम मात्रा में आवश्यक होगी।

वर्तमान में वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से वस्तुओं को सारभूत बनाया जाता है और पुराने जमाने में स्वतः ही पृथ्वी, पानी, वनस्पति आदि पदार्थों में स्निग्धता और ठोसता आधिक थी। धीरे-धीरे स्निग्धता में ह्रास होता गया और वस्तुएं आधिक मात्रा में आवश्यक होती गई। पृथ्वी आदि की स्निग्धता में हानि होने की बात स्पष्ट देखी जाती है।

खेत को व्यक्ति ने सौ बार बो दिया और नए सिरे से खाद वगैरह नहीं डाले तो वह भूमि ऊसर बन जाती है या फिर बहुत ही कम मात्रा में और निस्सार अनाज को पैदा करती है।

आहार की भांति ऊंचाई का भी यही क्रम है। अवसर्पिणी के प्रथम आरेके व्यक्तियों की ऊंचाई तीन गाऊ तीन क्रोश और दूसरे आरे वालों की दो गाऊ बताई गई है।

यह बात कुछ समय पूर्व तक हास्यास्पद-सी लगती थी। पर आज जब पुरातत्त्व-विभाग और विज्ञान ने इस बात को सिद्ध कर दिया कि पुराने जमाने में एक छिपकली भी हाथी जितनी बड़ी होती थी, तब जैन ग्रन्थों की बातें शत-प्रतिशत सत्य प्रतीत होने लगी हैं।

इसकी पुष्टि के लिए विज्ञान का गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत बड़ा उपयोगी है। जब पृथ्वी में गुरूत्वाकर्षण कम होता है तो वस्तुएं बड़ी होती हैं। और ज्यों-ज्यों गुरूत्वाकर्षण बढ़ता जाता है, वस्तुएं सिमटती चली जाती हैं। इससे जैन सिद्धान्तों की यह बात बिलकुल सत्य प्रतीत होती है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब मनुष्य की लम्बाई केवल एक हाथ रह जायेगी।

आहार और ऊंचाई की भांति प्रथम, द्वितीय और तृतीय आरे के व्यक्तियों का आयुष्य भी क्रमशः तीन पल्य, दो और एक पल्य का बताया गया है।

पल्य असंख्यात वर्षों का एक माप है। सौ वर्ष भी न जी सकने वाले लोगों के लिए असंख्यात वर्ष जीने की बात भी कम आश्चर्यजनक नहीं है।

पर जिन व्यक्तियों का भोग-विलास ओर अब्रह्मचर्य

सीमित हो, लालसाएं और चिन्ताएं नहीं के बराबर हों, बीमारियों और तनाव की स्वल्पता हो, खाद्य पदार्थों और दवाओं में विजातीय मिश्रण न हो तथा जिनको श्वास लेने और जीने की कला ज्ञात हो उनके लिए लम्बा आयुष्य कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

आज भी समाधि लेने वाले, प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाएं करने वाले, प्रारंभ से ही नियमित दिनचर्या रखने वाले, और तनावों, चिंताओं व कोलाहल से मुक्त रहने वालों का आयुष्प औसतन मनुष्यों से लम्बा होता है। क्योंकि वहां अकाल-मृत्यु के कोई कारण ही नहीं होते। अतः उन लोगों की पूर्णायु या परमायु प्राप्त होती है। ऐसा आज का विज्ञान भी मानता है।

जैन दर्शन-सम्मत ये कुछ विलक्षण तथ्य जो आज के विज्ञान की प्रयोगशाला में सत्य साबित हो चुके हैं, यहां पर उल्लिखित किये गए हैं।

हर गीत को मैं नया साज देना चाहता हूं,
हर कण्ठ को नई आवाज देना चाहता हूं,
पसन्द नहीं है मुझे एक घिसा-पिटा जीवन,
हर छन्द को मैं नया अन्दाज देना चाहता हूं।

-आचार्य रूपचन्द

जिन्दगी की मनहूस आवाजें
मौत से भी ज्यादा भयंकर होती हैं।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

मौत का तकाजा है
कि उसका पैगाम सुनकर
यह प्राणों का पंछी बिना छटपटाये,
स्वयं चला आये
और जिन्दगी का तकाजा है
कि उसका हर अरमान इस आदमी की
जीवित लाश को सुलगा-सुलगाकर जला जाये
धुओं के बादलों में सुलगती हुई आग
धधकते हुए अंगारों से ज्यादा भयंकर होती है!

खण्डहर का पत्थर गा रहा है
कि दिन-भर के श्रम से थका हुआ
कोई पौरुष चुपचाप यहां सो रहा है,
और महलों से कोई स्वर आ रहा है
कि रात-दिन के विलास से ऊबा हुआ
कोई पौरुष सिसक-सिसककर यहां रो रहा है
शायद, सिसकती हुई अमीरी की आहें
गरीबी की अनब्याही चाहों से ज्यादा भयंकर होती हैं।
पर यह आदमी भी बड़ा अजीब है
जो कि बिना जरूरत यों जिये ही जा रहा है
और विष-भरे समन्दर को होठों पर लगाये
शंकर बनने की धुन में उसे पिये ही जा रहा है
पर उसे नहीं मालूम
कि तिनकों की ओट में छिपी हुई सर्पिणी
गले में लिपटे सांप से ज्यादा भयंकर होती है।

(अंधा चांद (1965) पुस्तक से संकलित)

ब्रह्मवादिनी गार्गी की कथा

गतांक से आगे-

याज्ञवल्क्य बोले- ''मेरा विश्वास है गंधर्व ने यही उत्तर दिया होगा कि पारीक्षित वहां रहे, जहां अश्वमेघ यज्ञ करने वाले जाते हैं।''

''तो कृपया बताइए कि अश्वमेघ यज्ञ करने वाले कहां जाते हैं?''

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया- ''यह लोक बत्तीस 'देवरथाहन्य' के बराबर माना गया है। सूर्य के रथ की गति से एक दिन में संसार का जितना भाग नापा जाए, उसे देवरथाहन्य कहते हैं। बत्तीस दवरथाहन्य के बराबर इस लोक को उससे दुगुनी पृथ्वी चारों ओर से घेर हुए है। उसको भी सब ओर से उससे दोगुना समुद्र घेरे हुए है। सो जितनी पतली छुरे की धार होती है अथवा जितना सूक्ष्म मक्खी का पंख होता है, उतना उन ब्रह्मांडों के बीच में आकाश है। वहां वायु है, उसी में परीक्षित रहे और वहीं अश्वमेघ यज्ञ करने वाले जाते हैं। वायु ही व्यष्टि है, वायु ही समा-टि है, व्यष्टि अर्थात् एक अंश, समष्टि अर्थात् अंशों का समूह, अनंत विस्तार।''

अपने प्रश्न का उत्तर पाकर भुज्यु भी मौन हो गया। तब फिर चाक्रायण ओर कोहाल ने भी आत्मा के बारे में प्रश्न

किए। जिनके उत्तर याज्ञवल्क्य ने सही-सही देकर उनकी जिज्ञासा का सामाधान कर दिया। सबसे अंत में गार्गी ने याज्ञवल्क्य से जो प्रश्न किए, वे प्रश्न और उनके उत्तर इस प्रकार हैं।

''महर्षि! यह बताइए कि यह जो रचना है, वह जल में ओत-प्रोत है, किंतु जल किसमें ओत-प्रोत है?''

''वायु में।'' याज्ञवल्क्य ने बताया।

''और वायु किसमें ओत-प्रोत है?''

''अंतरिक्ष लोकों में।''

''और वे लोक किसमें ओत-प्रोत हैं?''

''गंधर्व लोकों में।''

''गंधर्व लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''आदित्य लोकों में।''

''आदित्य लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''चंद्र लोक में।''

''चंद्र लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''नक्षत्र लोकों में।''

''नक्षत्र लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''देव लोकों में।''

''देव लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''इंद्र लोकों में।''

''इंद्र लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''प्रजापति लोकों में।''

''प्रजापति लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

''ब्रह्म लोकों में।''

''ब्रह्म लोक किसमें ओत-प्रोत है?''

गार्गी के इस प्रश्न पर याज्ञवल्क्य बोले- ''गार्गी! यह तो तेरा अति प्रश्न है। ब्रह्मलोक के संबंध में अति प्रश्न अर्थात् व्यर्थ के प्रश्न करना समझदारी नहीं है। इससे तो यह प्रकट होगा कि तू कुछ जानती ही नहीं है, अर्थात् कोरे प्रश्नों में तुम्हारी रुचि है, तुम वास्तव में कुछ भी जानना नहीं चाहती हो।''

याज्ञवल्क्य की यह बात सुनकर गार्गी मौन हो गई। उसके बाद आरुणि उद्दालक ने प्रश्न किया, ''महर्षि! क्या आप उस सूत्र को जानते हैं, जिसमें यह लोक, परलोक और सारा भूत समुदाय गुंथा हुआ है और क्या आप उस अंतर्यामी को जानते हैं, जो इस लोक, परलोक और समस्त भूतों को भीतर से नियंत्रित करता है? याद रहे, मैं यह सब जानता हूं। यदि आप जानते हैं तो बताओ और बिना जाने ही यदि इन गायों को लेकर गए तो तुम्हारा मस्तक गिर जाएगा।''

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया, ''हां, मैं उस सूत्र और अंतर्यामी को भी जानता हूं।''

उद्दालक कहने लगा, ''मैं जानता हूं, ऐसा तो कोई भी

कह सकता है। ऐसा व्यर्थ ढोल पीटने से क्या लाभ है? यदि वास्तव में आपको इसका ज्ञान है तो बताते क्यों नहीं?''

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया, ''भद्र! वायु ही वह सूत्र है जिसके द्वारा यह लोक, परलोक और समस्त भूत समुदाय गुंथे हुए हैं। वायु के न रहने से ही सबका अंत हो जाता है।''

उद्दालक बोला, ''यह तो ठीक है, अब आप अंतर्यामी के बारे में बताइए।''

याज्ञवल्क्य ने कहा- ''जो पृथ्वी, जल, अग्नि, अंतरिक्ष, वायु, द्युलोक, आदित्य, दिशा, चंद्रमा, आकाश, तप, तेज, समस्त भूत, प्राण, वाणी, नेत्र, कर्णेंद्रिंय, मन, चमड़ी, विज्ञान, वीर्य आदि के भीतर रहता है, जो इनसे संबंधित प्राणियों के भीतर रहता है और सबका नियमन करता है, वहीं तुम्हारी आत्मा अंतर्यामी अमृत है। अंतर्यामी इन सबको जानता है, पर ये उसे नहीं जानते। वह दिखाई न देने वाला है, किंतु देखने वाला है, सुनाई न देने वाला है, किंतु सुनने वाला है, वह मनन करने वाला है, किंतु आसानी से ज्ञात न होने वाला, किंतु विशेष रूप से जानने वाला है। इस अंतर्यामी से भिन्न सब नाशवान है।''

उद्दालक का समाधान हो गया था, अतः वह मौन हो गया। गार्गी पुनः उठी और उसने कहा- 'पूजनीय ब्राह्मणों! आज मैं महर्षि याज्ञवल्क्य से दो प्रश्न पूछूंगी। यदि इन्होंने

मेरे इन दो प्रश्नों का उत्तर सही दे दिया तो ये समझ लीजिए कि आपमें से कोई भी इन्हें ब्रह्म-संबंधी वाद में नहीं जीत सकेगा।''

इस पर ब्राह्मणों ने कहा- ''ठीक है गार्गी! अब तुम प्रश्न पूछो।''

गार्गी ने याज्ञवल्क्य से कहा- ''याज्ञवल्क्य! जिस प्रकार काशी या विदेह का रहने वाला कोई वीर-वंशज पुरुष धनुष पर डोरी चढ़ाकर शत्रुओं को अत्यंत पीड़ा देने वाले दो फल वाले बाण हाथ में लेकर खड़ा होता है, उसी प्रकार मैं दो प्रश्न लेकर तुम्हारे सामने उपस्थित हूं। तुम मुझे उनका उत्तर दो।''

तुम प्रश्न पूछो, गार्गी।'' महर्षि बोले, ''मैं उत्तर देने के लिए तैयार हूं।''

गार्गी ने पूछा, ''महर्षि! जो द्युलोक से ऊपर हैं, जो पृथ्वी से नीचे हैं और जो द्युलोक और पृथ्वी के बीच में हैं और जो स्वयं भी ये द्युलोक और पृथ्वी हैं, भूत, वर्तमान, भविष्य हैं, वे किसमें ओत-प्रोत हैं?''

''ये सब आकाश में ओत-प्रोत हैं।'' उत्तर मिला।

गार्गी बोली, ''याज्ञवल्क्य! आपने मेरे पहले प्रश्न का उत्तर दिया, इसके लिए आप नमस्कार योग्य हैं। अब मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।''

महर्षि बोले, ''हां-हां, अवश्य पूछो गार्गी। क्या है तुम्हारा

दूसरा प्रश्न?''

''आकाश किसमें ओत-प्रोत है?'' गार्गी ने पूछा।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने बताना आरंभ किया, ''गार्गी! आकाश जिसमें ओत-प्रोत है, उस तत्त्व को ब्रह्मवेत्ता 'अक्षर' कहते हैं। वह अक्षर न मोटा है, न पतला, न छोटा है, न बड़ा, न ठोस है, न तरल, न छाया है, न अंधकार, न वायु है, न आकाश, रस, गंध, नेत्र, कान, वाणी, मन, तेज, प्राण, मुख, भाव कुछ भी नहीं है। उसमें भीतर बाहर कुछ भी नहीं है, वह कुछ भी नहीं खाता, उसे भी कोई नहीं खाता। और भी सुनो। इस अक्षर के ही प्रशासन में सूर्य और चंद्रमा स्थिर और स्थित रहते हैं। द्युलोक और पृथ्वी भी इसी तत्त्व में स्थित है। मुहूर्त, दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतु, संवत्सर सभी इसी के प्रशासन में स्थित हैं। नदी, पर्वत, दिशा जो कुछ भी है, सभी इसी के प्रशासन में स्थित हैं। सभी इसी के वश में है। जो कोई इस लोक में इस अक्षर को न जानकर हवन करता है, यज्ञ करता है और हजारों वर्ष तक तप करता है, उसका वह सब अंत होने वाला ही होता है, सब व्यर्थ हो जाता है। अक्षर को जाने बिना ही जो मरकर अन्य लोक में जाता है, वह अभागा है, जो इसे जानता है, वह सौभाग्यशाली है, ब्रह्मवेत्ता है। हे गार्गी! यह अक्षर स्वयं दृष्टि का विषय नहीं है, किंतु द्रष्टा है, श्रवण का विषय नहीं है, किंतु श्रोता है, स्वयं विज्ञाता है, किंतु दूसरों से

अविज्ञाता (अनजाना) रहता है। इससे अलग दूसरा कोई भी द्र-टा, श्रोता और विज्ञाता नहीं हैं।''

इतना बताकर याज्ञवल्क्य चुप हो गए।

गार्गी ने ब्राह्मणों से कहा- ''पूज्य ब्राह्मणों! आप लोग इसी को अपना सौभाग्य मानें कि आप महर्षि याज्ञवल्क्य को नमस्कार करें, इसी में आपका छुटकारा हो जाए। यह निश्चय है कि ब्रह्म-संबंधी वाद में याज्ञवल्क्य को कोई नहीं हरा सकता।'' इतना कहकर गार्गी याज्ञवल्क्य के सामने नतमस्तक होकर बैठ गई।

उस सभा में बहुत ही ज्ञानी, पंडित और सभा-चतुर शाकल्य भी बैठा था। उसने कहा- ''यदि याज्ञवल्क्य चाहें तो मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर भी दें। मुझे भी इनसे कुछ पूछना है।''

याज्ञवल्क्य ने सहर्ष उसका आग्रह स्वीकार कर लिया। तब शाकल्य ने उनसे पूछा, ''महर्षि! इस समूचे ब्रह्मांड में कितने देवगण हैं?''

याज्ञवल्क्य ने कहा- ''देवताओं की संख्या बताने वाले मंत्र-पदों में जितने देवता बताए गए हैं, उनकी संख्या तीन और तीन सौ तथा तीन और तीन सहस्र अर्थात् तीन हजार तीन सौ छह है।''

शाकल्य ने कहा- ''ठीक है। अच्छा बताओ, कितने देव हैं?''

''तैंतीस।''

शाकल्य ने फिर वही प्रश्न दोहराया, ''कितने देव हैं?''

महर्षि का उत्तर था, ''छह।'' इसी प्रकार बार-बार पूछे जाने पर याज्ञवल्क्य ने तीन, दो डेढ़ और एक तक देव संख्या बताई।

शाकल्य ने फिर प्रश्न किया, ''वे तीन और तीन और तीन हजार देव कौन-कौन से हैं?''

उत्तर था, ''यह तो इनकी महिमाएं ही हैं। देवगण तो तैंतीस ही हैं।''

''वे तैंतीस कौन-से हैं?''

याज्ञवल्क्य ने बताया, ''आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, इंद्र और प्रजापति सब मिलकर तैंतीस हैं।''

''वसु कौन हैं?''

''अग्नि, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, द्युलोक, चंद्रमा और नक्षत्र, ये वसु हैं, इन्हीं में सब जगत समाया हुआ है, इसीलिए ये वसु हैं।''

''रुद्र कौन हैं?'' अगला प्रश्न हुआ।

''पुरुष में दस प्राण (इंद्रियां) और ग्यारहवां आत्मा (मन) है। ये जिस समय मरणशील शरीर में से निकलते हैं, तब संबंधियों को रुलाते हैं। रोदन अर्थात रुलाने का कारण होने से ही ये 'रुद्र' कहलाते हैं।''

''आदित्य कौन है?''

"संवत्सर के बारह मास ही आदित्य हैं, क्योंकि ये सब इसको ग्रहण करते हुए चलते हैं, अतः आदित्य कहलाते हैं।"

"इंद्र कौन है?"

"विद्युत ही इंद्र है।"

"प्रजापति कौन है?"

"यज्ञ! यज्ञ ही प्रजापति है।"

"छह देवगण कौन हैं?"

"अग्नि, पृथ्वी, वायु, अंतरिक्ष, आदित्य और द्युलोक।" उत्तर मिला।

"तीन देव कौन हैं?"

"तीन लोक ही तीन देव हैं।"

"दो देव कौन हैं?"

"अंत और प्राण ही दो देव हैं।"

"डेढ़ देव कौन हैं?"

"यह जो बहती है, वायु।"

शाकल्य ने शंका की, "

क्रमशः

सुख-समृद्धि प्रदान करती हैं मदर कुयान यिन

घर पर हमेशा देवी-देवताओं की सकारात्मक कृपा बनी रहे, इसके लिए हम कोई न कोई पूजा-पाठ करते या कराते रहते हैं लेकिन फैंगशुई में कुछ ऐसे देवी-देवता हैं जिनकी छवि घर में रखने मात्र से ही अनेक प्रकार की बाधाएं शांत होती हैं और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश एवं वृद्धि होती है।

<u>लुक-फुक-साऊ</u>

• ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के समान ही लुक, फुक एवं साऊ चीनी देवता हैं जिन्हें एक साथ प्रदर्शित किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इनकी उपस्थिति से घर में सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की वृद्धि होती है।

• लुक उच्च श्रेणी के देवता माने जाते हैं। इनके सिर पर चपटी टोपी होती है तथा चेहरे पर लम्बी काली दाड़ी। इनके बाएं हाथ में गदा के समान एक अस्त्र होता है जिसे रूईब कहा जाता है। इसकी मूर्ति रखने से व्यक्ति ऊंचे ओहदे पर पहुंचने की कामना को पूर्ण करता है।

• फुक की को समृद्धि का देवता माना जाता है। इनकी छवि (कद) लुक से लंबी होती है। इनके सिर पर गोल टोपी होती है तथा चेहरे पर घनी, लम्बी एवं काली

दाढ़ी होती है। जिस घर में फुक की मूर्ति रहती है, उस घर में आमदनी में वृद्धि होती है।

• साऊ को दीर्घायु का देवता माना जाता है। इनका स्वरूप बुजुर्ग वाला होता है। इनका सिर गौल एवं गंजा होता है। इनकी दाढ़ी लम्बी एवं सफेद है। इनके सिर पर टोपी नहीं होती।

• सुख, समृद्धि, शक्ति, स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के प्रतीक इन तीनों चीनी देवताओं (लुक-फुक-साऊ) को एक साथ, एक स्थान पर रखा जाता है। इन मूर्तियों को घर के डाइनिंग रूम में आई लेवल से ऊंचा रखा जाना चाहिए। इसे कार्यालय, फैक्ट्री आदि में भी रखा जाता है। इनके रखने मात्र से सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होने लगती है।

<u>कुयान कुंग</u>

चीन के निवासी कुयान कुंग को शक्ति का प्रतीक मानते हैं। वहां के लोगों को मानना है कि कुयान कुंग की छवि को प्रवेश द्वार के पास लगाने से अनेक प्रकार की बाधाएं घर में प्रवेश नहीं कर पाती तथा शक्ति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। सेनानायक की तरह युद्ध का कवच पहने तथा युद्ध के लिए तत्पर रहने की मुद्रा में इनका स्टैच्यू आता है। नवयुवकों में जोश-उमंग उत्पन्न करने, प्रतियोगिताओं में जीत हासिल करने तथा व्यापार में वृद्धि करने हेतु इनकी प्रतिमा को घर या कार्यालय के प्रवेश द्वार के निकट लगाया जाता है।

ही चिंग

यह एक षोडशी स्वरूपा नवयुवती की छवि है। चीन की नवयुवतियों की प्रिय देवी मानी जाती है। फैंगशुई के अनुसार ही चिंग की छवि को शयनकक्ष में रखने से पति-पत्नी के बीच मधुर संबंध बना रहता है। कुंवारी कन्याओं के शयन-कक्ष में इसका स्टैच्यू रख देने मात्र से इनकी सोच में पवित्रता आने लगती है। वैवाहिक बाधाओं को दूर कराकर अच्छे जीवन साथी को प्रदान करने में ही 'ही चिंग' की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। चीन में 'ही चिंग' की प्रतिमा प्रत्येक घर में रखी जाती है।

मदर कुयान यिन

फैंगशुई में इन्हें लेडी लाफिंग बुद्धा भी कहा जाता है। इन्हें दया की देवी भी कहा जाता है। लोगों का मानना है कि यह जिस घर में रहती हैं, वहां मां के समान वहां के लोगों की देखभाल करती हैं तथा बुरी नजरों के प्रभाव से बचाती हैं। यह अधिकरतर बैठी हुई मुद्रा में होती है तथा सफेद वस्त्र धारण किये होती हैं। इनका आसन कमल का फूल है। यह घर के बच्चों तथा महिलाओं की विशेष रूप से रक्षा करती हैं। मदर कुयान यिन घर के सदस्यों के भाग्य को जगाती हैं। नवदम्पति में आपसी प्रेम जगाती हैं, निःसंतानों को संतान सुख प्रदान कराती हैं तथा अनेक बीमारियों में रक्षा करती हैं।

प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

1. चन्दन- यार मुझे अपनी गर्लफ्रैंड को गिफ्ट देना है। तू बता दे क्या दूं?
प्रवीण- अंगूठी दे दे।
चन्दन- कुछ बड़ा देना होगा।
प्रवीण- गाड़ी का टायर दे दे।

2. एक मोटी औरत रिक्शे पर बैठकर गाने लगी-
देखा है पहली बार साजन के आंखों में प्यार।
तो रिक्शे वाला बोला- मैडम जी आप ये क्यों गा रही हो, यह गाना गाओ- देखा है पहली बार रिक्शे पर हाथी सवार।

3. एक बार एक लड़की चाये वाले से चाय मांगकर पीने लगी तभी चाय वाले को मस्ती सूझी वह कहने लगा-
भोली-सी सूरत आंखों में मस्ती, दूर खड़ी शरमाए हाय-हाय।
लड़की को यह सुनकर गुस्सा आया और कहने लगी-
काली सी सूरत हाथों में केतली दूर खड़ा चिल्लाए चाय-चाय।

प्रस्तुति : दिव्या

बर्ताव से जुड़ी है इज्जत

काफी पहले की बात है बहुत संपन्न ओर अच्छे संस्कारों वाला एक राज्य था। इसका मुख्य कारण वहां का राजा था उनके सभी दरबारी अपने-अपने क्षेत्र के पारंगत और दायित्व निभाने वाले थे। राजा जब किसी समस्या में उलझ जाते तो उसका हल और सलाह मशविरा अपने राजपुरोहित से लेते थे। राजपुरोहित बहुत विद्वान ओर राज्य के लिए समर्पित थे। राज्य के सभी काम बहुत अच्छी तरह चल रहे थे। रोज दरबार के वक्त सभी दरबारियों के आने के बाद राजपुरोहित दरबार में आते थे। इनके सम्मान में राजा सहित सभी दरबारी अपना आसन छोड़कर खड़े हो जाते। राजपुरोहित के बैठने पर ही सभी दरबारी बैठते थे। एक दिन राजपुरोहित के मन में एक सवाल आया, मेरे सम्मान का कारण मेरी विद्वता है या मेरा आचरण है? काफी दिनों तक सोचने के बाद भी उन्हें ऐसा कोई जवाब नहीं सूझा जो मन को संतुष्ट कर सके। किसी दूसरे से उत्तर इसलिए नहीं पूंछ सकते थे क्योंकि वह खुद को सबसे ज्यादा विद्वान मानते थे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने यह

इस उलझन को सुलझाने के लिए आधी रात को जागकर राजकीय खजाने में पहुंचे। खजाने की सुरक्षा करने वाले उन्हें जानते थे इसलिये उनको अन्दर जाने दिया। अन्दर पहुंचकर उन्होंने सैनिकों और सेवकों को आदेश दिया कि 5 बोरे सोने की मुद्राओं के भरकर मेरे घर पहुंचाएं। सैनिक और सेवक उनका आदेश मानते हुए सोने की मुद्राओं के भरे हुये बोरे उनके घर पहुंचा आए। फौरन राजा को सूचना दी गयी कि कोषागार में चोरी हो गयी है। राजा ने फौरन आदेश देते हुए कहा कि चोरी करने वाले चोरों को दरबार में हथकड़ी डालकर उपस्थित किया जाए। राजपुरोहित खजाने से सोने की मुद्राएं लाने के बाद भी निश्चिन्त होकर घर में सोते रहे थे। थोड़ी देर में राज्य के सैनिकों ने राजपुरोहित को गिरफ्तार कर लिया और सोने की मुद्राएं इकट्ठी कर राज दरबार में लाने के लिये हवालात में बंद कर दिया। सुबह दरबार लगा कर सभी दरबारी मौजूद थे। रोज की तरह राजपुरोहित मौजूद नहीं हुए। राजा ने मंत्री से पूछा कि राजपुरोहित कहां हैं? थोड़ी देर में राजपुरोहित हथकड़ियों में बंधे हुए और सोने की मुद्राओं के बोरों के साथ राजा के सामने लाए गए। राजपुरोहित को देखकर राजा शिष्टाचारवश सिंहासन छोड़कर खड़े ही होने वाले थे लेकिन फैसला लेने से पहले उन्होंने राजपुरोहित से पूछा कि मैं

शिष्टाचार का पालन करूं या धर्म का? राजा का यह सवाल सुनकर राजपुरोहित ने कहा जो राजा के लिए ज्यादा जरूरी हो वैसा आचरण अपनाओ। राजा ने खुद कोई निर्णय करने के बजाए राजपुरोहित से एक दूसरा सवाल पूछा कि ऐसी क्या परिस्थिति पैदा हो गई कि राजपुरोहित को भी राज्य के खजाने से चोरी करनी पड़ी। यदि आप आदेश देते तो सम्मान के साथ इनसे कहीं ज्यादा मुद्राएं आपके पास पहुंचा दी गई होती। इसमें आपका भी सम्मान रहता और राज्य की भी प्रतिष्ठा भी बन ही रहती। राजपुरोहित ने कहा कि महाराज जिस सवाल के जवाब के लिए मुझे यह हरकत करनी पड़ी। उसका जवाब मुझे मिल गया और मुझे जीवन का सच पता चल गया है। इसलिए मुझे चोर की तरह सजा दी जाए और इसका संदेश आम जनता तक पहुंचा दिया जाए।

''इंसान का सम्मान उसकी विद्वता से नहीं बल्कि उसके आचरण से होता है। मेरी विद्वता में आज भी कोई कमी नहीं आई थी लेकिन मैं अपने आचरण से गिर गया और सजा का उपहार स्वीकार करना पड़ा।''

प्रस्तुति : नमन जैन

थिरुवल्लम परशुराम मंदिर, कोवलम के पास करमाना नदी के तट पर स्थित है। यह पूरे केरल में अकेला ऐसा मंदिर है जो भगवान परशुराम को समर्पित है। त्रिवेंद्रम हवाई अड्डा और कोवलम, दोनों से 9 किलोमीटर की दूरी पर यह मंदिर मध्य में स्थित है।

इतिहासकार विश्वास करते है कि यह मंदिर बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच बनवाया गया था, यह निर्माण एक विरासत है और अब केरल के पुरातत्व विभाग के अंतर्गत आता है। कई लोग 'बलीथार्पमन' के लिए यहाँ आते है, जिसमें वे अपने पूर्वजों को प्रसाद चढ़ाते है। यह रस्म विशेष रूप से 'कार्कीदाका बावू' के दिन, करमाना नदी के पवित्र जल में स्नान करने के बाद निभाई जाती है। यह मंदिर भगवान परशुराम को श्रद्धांजलि देने के लिए बनवाया गया था, क्योंकि ऐसा माना जाता है केरल का निर्माण उन्हीं ने किया था। उनके भक्तों के बीच यह मंदिर बहुत प्रसिद्ध है, और अपनी प्रार्थनाओं को भगवान के सामने रखने के लिए हर साल भक्तों की बाढ़ इस मंदिर में आती है।

प्रस्तुति : सुशांत जैन

मेधातिथि भारतीय गणित के प्रथम अन्वेषक

भारत के प्राचीनतम वैज्ञानिक चिंतकों में मेधातिथि का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। मेधातिथि प्राचीन काल के ऋषि थे जिनके द्वारा रची गई ऋचाएं ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में मिलती हैं। मेधातिथि की बहुत सी ऋचाएं ऐसी हैं जिनसे पता चलता है कि उन्हें अंकगणित की खासी जानकारी थी। आज एक से दस खरब के लिखने की जो भारतीय पद्धति है, वैदिक काल में मेधातिथि न सिर्फ उसका खूबसूरत इस्तेमाल कर रहे थे, बल्कि उसके आधार पर सुंदर काव्य-रचना भी कर पा रहे थे। इस लिहाज से मेधातिथि को 'भारतीय गणित या अंकों का प्रथम अन्वेषक' कहा जा सकता है। यजुर्वेद में मेधातिथि के नाम से एक श्लोक दिया गया है जिसमें ईंटों के जरिए गिनती की गई है। इस श्लोक में अंकों के खेल या गिनती का आनंद निराला है। संख्याओं के सहारे सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊपर चढ़ना, यानी दस के गुणनफल वाली इस गिनती या पहाड़े के कारण यह श्लोक निश्चित रूप से विलक्षण कहा जा सकता है। प्रार्थना के इस सुंदर श्लोक का भाव यह है- 'हे अग्निदेव, ये ईंटें मेरी दुधारू गाय के समान हैं। एक और दस, शत (100), एक सहस्त्र (1000), एक अयुत (10000), एक नियुत (100000), एक प्रयुत (1000000), एक अर्बुद (10000000), एक नियारबुद (100000000),

एक समुद्र (1000000000), एक मध्य (10000000000), और अंत (100000000000), प्रारर्ध (1000000000000) हो जाएं। ये ईंटें इस संसार और अगले संसार में भी मेरी अपनी दुधारू गाय हो जाएं।' इससे पता चलता है कि मेधातिथि को शून्य की जानकारी थी। वह अच्छी तरह जानते थे कि एक-एक शून्य बढ़ने से संख्या का मान बढ़ता जाता है। बढ़ते-बढ़ते वे संख्या को दस खरब यानी एक प्रारर्ध तक ले गए थे। वैज्ञानिक शब्दावली में लिखें तो एक प्रारर्ध का मतलब होगा, दस की घात बारह, यानी एक प्रारर्ध=1012। संसार भर में कहीं भी लोग उस समय इतनी बड़ी गिनती से परिचित नहीं थे। वे हजार, दस हजार या एक लाख तक तो गिन सकते थे पर इससे अधिक नहीं। यानी अधिक से अधिक 105 तक संसार के गणितज्ञ परिचित थे जबकि भारत के वैदिक ऋषि और गणितज्ञ मेधातिथि 1012 तक गिनती खूब अच्छी तरह कर रहे थे। हां, मेधातिथि और उनके समय की यह सीमा तो अवश्य है कि इनकी बड़ी संख्याओं को अंकों में लिखने की विधि उस समय प्रचलन में नहीं आई थी। छोटी संख्याओं को तो रेखाओं या कुछ और संकेतों द्वारा लिख लिया जाता था पर बड़ी संख्याएं अभी शब्दों में लिखा जाती थीं। फिर भी मेधातिथि ने संख्याओं का इतना सही और सटीक इस्तेमाल अपने श्लोक में किया है कि उन्हें भारतीय गणित और अंकों का आविष्कारक कहना कुछ गलत न होगा।

प्रस्तुति : अरविन्द मिश्रा

एकाग्रता पर पाश्चात्य चिन्तन

❍ साध्वी मंजुश्री

मानसिक एकाग्रता के सम्बन्ध में भारतीय चिन्तकों ने जितना अपने मन को डुबोया है, उतना भारतेतर चिन्तकों ने नहीं। पर मानसिक अस्थिरता-जनित पीड़ा- यह विषय तो सार्वभौम है। भारतवासी को ही यह परेशानी रहती हो, अन्य देशों के लोग इससे मुक्त हों- ऐसी कोई भौगोलिक रेखा नहीं खिंची हुई है।

भारतेतर विचारकों ने भी मानसिक एकाग्रता पर बहुत सोचा-विचारा है और अनेक उपाय खोजे हैं- मन को एकाग्र करने के। एकाग्रता व्यक्ति को बाह्य जगत-जंजालों से निकालकर सूक्ष्म जगत में पहुंचा देती है।

किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त करना हो या किसी विषय में विशेष योग्यता प्राप्त करनी हो, मानसिक एकाग्रता के अभाव में पूर्णत्व को नहीं छुआ जा सकता है। सोहम् का जाप पूर्णरूप से सहयोगी होता है इसमें। भारत के तत्त्व-चिन्तक व दार्शनिक इस बात में एकमत हैं कि अटूट श्रद्धा व दृढ़ संकल्प से किया गया सोहम् जाप अजपाजाप है और वह चिन्ता, भय व मनस्तापों को नष्ट कर देता है।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों का मत है कि कम्पन व्याप्त है पूरे वायुमण्डल और आकाश में। भारत के सभी चिन्तक कहते हैं- समस्त विश्व में एक चेतना परिव्याप्त है। इसके सम्यक् ज्ञान से व अनुभव से क्लेश एवं परेशानियों का उन्मूलन होता है। इससे बड़ी बात उन्होंने यह कही कि सोहम् जाप से समाधि अवस्था तक पहुंचा जा सकता है।

केमद्रूम योग : संघर्ष से लड़ने की क्षमता देता है

केमद्रूम योग इतना अनिष्टकारी नहीं होता जितना कि इसके बारे में बताया जाता है। इसलिए व्यक्ति को इससे भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि यह योग व्यक्ति को सदैव बुरे प्रभाव नहीं देता अपितु वह व्यक्ति को जीवन में संघर्ष से जूझने की क्षमता एवं ताकत देता है, जिसे अपनाकर जातक अपना भाग्य निर्माण कर पाने में सक्षम हो सकता है। सामान्यतः यह देखने में आता है कि मन जब अकेला हो तो वह इधर-उधर की बातें अधिक सोचता है और व्यक्ति में चिंता करने की प्रवृत्ति अधिक होती है, इसी प्रकार के फल केमद्रूम योग देता है।

यदि चंद्रमा से द्वितीय और द्वादश दोनों स्थानों में कोई ग्रह नहीं हो तो केमद्रूम नामक योग बनता है या चंद्र किसी ग्रह से युति में न हो या चंद्र को कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो कुंडली में केमद्रूम योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति जीवन में कभी न कभी दरिद्रता एवं संघर्ष से ग्रस्त होता है। इसके साथ ही साथ व्यक्ति अशिक्षित या कम पढ़ा-लिखा, निर्धन एवं मूर्ख भी हो सकता है। यह भी कहा जाता है कि केमद्रूम योग वाला व्यक्ति वैवाहिक जीवन और संतान पक्ष का उचित सुख नहीं प्राप्त कर पाता है। वह सामान्यतः घर से दूर ही रहता है तथा परिजनों को सुख देने में प्रसासरत रहता है।

शुभ और अशुभ फल

केमद्रूम योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति निर्धनता एवं दुख को भोगता है तथा आर्थिक दृष्टि से वह गरीब होता है तथा आजिविका संबंधी कार्यों के लिए परेशान रह सकता है। मन में भटकाव एवं असंतुष्टि की स्थिति बनी रहती है और व्यक्ति हमेशा दूसरों पर निर्भर रह सकता है।

केमद्रूम योग के बारे में ऐसी मान्यता है कि यह योग संघर्ष और अभाव ग्रस्त जीवन देता है। इसलिए ज्योतिष के अनेक विद्वान इसे दुर्भाग्य का सूचक कहते हैं लेकिन यह अवधारणा पूर्णतः सत्य नहीं है। केमद्रूम योग से युक्त कुंडली के जातक कार्यक्षेत्र में सफलता के साथ-साथ यश और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करते हैं। वस्तुतः अधिकांश विद्वान इसके नकारात्मक पक्ष पर ही अधिक प्रकाश डालते हैं। यदि इसके सकारात्मक पक्ष का विस्तारपूर्वक विवेचन करें तो हम पाएंगे कि कुछ विशेष योगों की उपस्थिति से केमद्रूम योग भंग होकर राजयोग में परिवर्तित हो जाता है।

जब कुंडली में लग्न से केन्द्र में चंद्रमा या कोई ग्रह हो तो केमद्रूम योग भंग माना जाता है। योग भंग होने पर केमद्रूम योग के अशुभ फल भी समाप्त होते हैं। कुंडली में बन रही कुछ अन्य स्थितियां भी इस योग को भंग करती हैं। जैसे- चंद्रमा सभी ग्रहों से दृष्ट हो या चंद्रमा शुभ स्थान में हो या चंद्रमा शुभ ग्रहों से युक्त हो या पूर्ण चंद्रमा लग्न में हो या चंद्रमा दसवें भाव में उच्च का हो या केन्द्र में चंद्रमा पूर्ण बली हो अथवा कुंडली में सुनफा, अनफा या दुरूधरा योग बन रहा हो, तो केमद्रूम योग भंग हो जाता है। यदि चंद्रमा से केन्द्र में कोई ग्रह हो तब भी यह अशुभ योग भंग हो जाता है और व्यक्ति इस योग के प्रभावों से मुक्त हो जाता है।

शांति के उपाय

• सोमवार को पूर्णिमा के दिन अथवा सोमवार को चित्रा नक्षत्र के समय से लगातार चार वर्ष तक पूर्णिमा का व्रत रखें।

• सोमवार के दिन भगवान शिव के मंदिर जाकर शिवलिंग पर गाय का कच्चा दूध चढ़ाएं व पूजा करें। भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन करें।

• घर में दक्षिणावर्ती शंख स्थापित करके नियमित रूप से श्रीसूक्त का पाठ करें। दक्षिणावर्ती शंख में जल भरकर उस जल से देवी लक्ष्मी की मूर्ति को स्नान कराएं तथा चांदी के श्रीयंत्र में मोती धारण करके उसे सदैव अपने पास रखें या धारण करें।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

मासिक राशि भविष्यफल- अगस्त 2016

❍ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफलदायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टिदायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्माण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला हैं कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। कुछ जातक कोई नया कार्य शुरू कर सकते हैं तो कुछ जातकों की पदोन्नति संभव है।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा-जाही लगी रहेगी। कुछ नई योजनाओं का क्रियान्वयन होने का समय है। स्वास्थ्य के

प्रति सचेत रहें।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएं पूरी होने की खुशी होगी।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रमसाध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्यधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फलदायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी-मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं में शामिल होंगे। कुछ जातकों को भूमि-भवन का लाभ ही संभव है। लेन-देन संबंधी मामलों में सतर्कता बरतें।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की

दृष्टि से इस माह का प्रारंभ तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों के लंबित पड़े भूमि-भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवारजनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा, किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता-आता पैसा रुक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेंगी। मानसिक चिंता बनेगी।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़ें। इन जातकों के भूमि-भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु

परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी, किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक यात्रा तो करें पर इस माह पहाड़ी यात्रा न करें। ये जातक किसी भी वार्ता में अपशब्द बोलने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्भ तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा। मानसिक चिंता बनी रहेगी।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफलदायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं।

-इति शुभम्

ज्ञान-प्राप्ति के साथ पात्रता भी जरूरी

गुरू-पूर्णिमा पर पूज्य गुरूदेव का संदेश

17 जुलाई, 2016, रविवार, जैन आश्रम, ध्यान मंदिर में गुरू-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में आयोजित धर्म-सभा में अपने उद्‌बोधन-संदेश में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी ने कहा- गुरू-महिमा इसीलिए है कि अज्ञान-मोह-अंधकार को दूर कर गुरूदेव ज्ञान की आंखों को खोल देते हैं। कहते भी हैं- गुरू बिना ज्ञान नहीं। निसंदेह सद्‌गुरू समान रूप से सबको ज्ञान बांटते हैं। किंतु कौन कितना उस आशीर्वाद को प्राप्त करता है, यह उसकी पात्रता पर निर्भर है। विनय-रहित शिष्य शब्द-सीमित ज्ञान तक ठहर जाता है। विनीत शिष्य अर्थ की गहराइयों तक ज्ञान-सागर में उतर जाता है।

दो छात्र गुरूदेव के पास ज्ञानार्जन करके अपने घर की ओर लौट रहे थे। रास्ते में विश्राम के लिए एक सरोवर-किनारे बैठे। तभी गांव से एक स्त्री पानी के लिए सरोवर पर आई। पानी का घड़ा सिर पर रखकर वापस जाने को मुड़ी, तभी उसकी नजर उन पंडित छात्रों पर पड़ी। उसने प्रणाम करते हुए उनसे पूछा- मेरे पतिदेव वर्षों से विदेश-यात्रा पर गए हैं। आप कृपा करके बताएं, मेरा उनसे मिलन कब होगा। इसी प्रश्न के साथ संयोग-वश उसके हाथों से घड़ा छूट कर धरती पर गिर पड़ा। घड़ा फूटना ही था, पानी भी बहकर सरोवर में मिल गया।

उन पंडित-पुत्रों में एक को अपने ज्ञान पर अहंकार था। वह बोला- निमित्त-शास्त्र के अनुसार आपका पति-मिलन असंभव है। प्रश्न के साथ ही जैसे वह घड़ा फूट गया है। इसका अर्थ है आपके पतिदेव भी अब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। यह सुनते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी।

तभी दूसरे विनीत पंडित-छात्र ने उसे ढाढस बंधाते हुए कहा- आप रोइये मत। आपके पति-देव घर पर आपका इंतजार कर रहे हैं। आपके हाथ से घड़ा छूटा। धरती पर गिरा। घड़ा फूटते ही मिट्टी-मिट्टी में मिल गई। पानी-पानी में मिल गया। वैसे ही घर पर आप का अपने पतिदेव से मिलन हो जाएगा। और ऐसा ही हुआ। घर पर उसका पतिदेव से मिलन हो गया। सारांश यही है अविनीत का ज्ञान अहंकार के कारण उथला-उथला रहता है। विनीत का ज्ञान गहराइयों में उतरता है। इसलिए जरूरी यह है सद्गुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान से विनय और विनय से पात्रता आनी चाहिए। वह ज्ञान अपने लिए तथा जन-जन के लिए कल्याणकारी होता है। सद्गुरू के प्रति आभार प्रकट करने का पर्व ही गुरू-पूर्णिमा है।

<u>पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी का 81वाँ जन्म-दिवस</u>

पूज्य आचार्यवर ने कहा- आज के उत्सव के साथ एक और उल्लासपूर्ण प्रसंग जुड़ गया है। वह है पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी महाराज का 81वाँ जन्म-दिवस। जीवन के 81 वसंत संपन्न करके आज आप 82वें वर्ष में

प्रवेश कर रहे हैं। आपने अपने ज्ञान, तप और अनुशासन-कौशल से समाज का अनमोल मार्ग-दर्शन किया है। अस्वस्थता के कारण सक्रियता पर असर आना सहज है। इससे मन भारी होना भी स्वाभाविक है। लेकिन इस अवसर पर मेरा आपसे इतना ही कहना है-

आप जो हमारे बीच बिराजमान हैं
यह भी हमारे लिए एक वरदान है
आरोग्यपूर्वक आप चिरायु हों, शतायु हों
पूरे समाज के दिलों का यही अरमान है।

पूज्या साध्वीश्री जी के जन्म-दिन पर मातृस्वरूपा साध्वी चांदकुमारीजी ने शाल ओढ़ाकर आपका वर्धापन किया। साध्वी-समुदाय तथा बालिकाओं ने मंगल गीत गाया। रूपरेखा-संपादिका श्रीमती निर्मला पुगलिया ने साध्वीश्रीजी की चित्रमय झांकी कलाकृति आपको भेंट की। कुमारी पिंकी, कुमारी मानसी, कुमारी दिव्या तथा कुमारी मुक्ति ने अपने हस्त-निर्मित चित्रों से पूज्या साध्वीश्री की अभ्यर्थना की। समाज-सेवी श्रीमती मंजुबाई जैन ने मधुर गीतिका के माध्यम से गुरू-पूजा तथा साध्वीश्री जी को मंगल कामनाएं दीं। रोहतक से श्रीमती किरणा गुप्ता जो बचपन से साध्वीश्री के प्रति श्रद्धाशील रही है, अपने भावपूर्ण भजन में सबको बहा लिया। प्रो. मानव, डॉ. वीनिता गुप्ता तथा पूर्व निदेशक, दिल्ली दूरदर्शन श्री गौरी शंकर रैना ने भी अपनी भावांजलि

प्रस्तुत की। इस प्रसंग पर पूज्या साध्वीश्री ने कहा- आपकी मंगल भावनाएं तथा शुभ-कामनाएं को बहुमान देते हुए मैं स्वीकार करती हूं। पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद, साध्वी-समुदाय की सजग सेवायें तथा आप सबके श्रद्धा भरे प्रेम से मैं पूर्ण सुख-शांति और समाधि का जीवन जी रही हूं। इतना अवश्य है मेरा अपना स्वास्थ्य ही मुझे पूरा साथ नहीं दे रहा है। इसको भी मैं कर्म-निर्जरा के रूप में समता-भाव से स्वीकार करती हूं। आप से यही कहना है पूज्य गुरूदेव के शिक्षा, सेवा तथा साधना के इस मिशन को खूब ऊँचाइयों तक ले जाना है। आरोग्य पूर्वक जीवन तथा समाधिपूर्वक मरण की कामनाओं के साथ आप सबके प्रति आभार।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समताश्रीजी ने तथा व्यवस्था-पक्ष साध्वी कनकलताजी ने कुशलता से सम्हाला। योगी अरूण तिवारी ने सबके प्रति आभार-ज्ञापन किया। प्रसाद-भंडारा समाज-सेवी श्री राजेन्द्रजी श्रीमती जैनदेवी जैन ने खुले दिल से किया। मानव मंदिर महिला मंडल की बहनों के अतिथि-सत्कार से सभी प्रभावित थे समाज-सेवी श्री सुभाष तिवारी ग्लोबल ब्राह्मण समाज की ओर से गुरूदेव गुरूदेव तथा साध्वीश्री का अभिनन्दन किया समारोह की आनंदपूर्ण गूंज मुख-मुख पर झलक रही थी।

S.M.R University द्वारा मानव मंदिर गुरूकुल का सम्मान

मोदीनगर, उत्तर प्रदेश में स्थित S.M.R University के चेयर-मैन के जन्म दिवस ''स्टाफ वेलफेयर डे'' के शुभ अवसर पर युनिवर्सिटी के डिप्टी रजिस्ट्रार श्री विश्वनाथन जी के विशेष आग्रह पर पूज्य गुरूदेव की आज्ञा से साध्वी समताश्री जी के नेतृत्व में मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों के युनिवर्सिटी में जाना हुआ। विद्यालय का सुंदर वातावरण बच्चों का मन मोह रहा था। कार्यक्रम के शुरू में ही श्री विश्वनाथन जी ने जो मानव मंदिर मिशन का परिचय करवाया वह अद्‌भुत था। उसके बाद तो सभी सम्माननीय वक्ताओं ने गुरूकुल के बारे में बहुत ही सम्मान जनक शब्दों का प्रयोग किया। चेयरमैन के जन्म-दिवस पर केक काटने का कार्यक्रम भी था तो गुरूकुल के बच्चों से ही केक कटवाया गया। बच्चों ने मंत्रोच्चार से शुभ कामनायें दी। इसके पश्चात् रंगा-रंग कार्यक्रम शुरू हुआ कॉलेज के छात्रों तथा छात्राओं ने अच्छे कार्यक्रम दिये। लेकिन गुरूकुल की बालिकाओं के कार्यक्रम का तालियों की गड़गडाहट से मनोबल बढ़ाया गया। जब गुरूकुल के लड़कों ने योगा का प्रदर्शन किया तो ऑडिटोरियम में उपस्थित दर्शकों ने खड़े होकर जो तालियां बजाई वो दृश्य भी अद्‌भुत था। जो सम्मान वहां मानव मंदिर को मिला वह पूज्य गुरूकुल के आशीर्वाद से ही संभव है।

-महासती साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के जन्मोत्सव पर स्व-हस्त निर्मित पेंटिंग प्रस्तुत करते हुए मानव मंदिर गुरूकुल की बालिकायें पिंकी जैन एवं मानसी जैन।

-गुरुपूर्णिमा के अवसर पर साध्वी समुदाय तथा गुरूकल की बालिकायें गुरु-चरणों में कविता पाठ करते हुए।

-श्रीमती अर्चना मिश्रा का सम्मान करते हुए श्री प्रभास तिवारी, श्री सुभाष तिवारी एवं योगी अरूण तिवारी।

-डॉ. श्रीकान्त मिश्रा, श्री आर.डी. दिक्षित, श्रीमती अचर्ना मिश्रा व रमेश तिवारी का सम्मान करते हुए ब्राह्मण समाज ऑफ इंण्डिया के पदाधिकारी।

-एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी में दीप प्रज्जवलित करते हुए मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे, साध्वी समताश्री जी व यूनिवर्सिटी के पदाधिकारी।

-हंस अकेला की लेखिका डॉक्टर विनीता गुप्ता, प्रोफ़ेसर फूलचंद मानव, दूरदर्शन के पूर्व डायरेक्टर गौरीशंकर रैना, मानव मंदिर के ट्रस्टी सुभाष चंद्र तिवारी व ट्रस्टी-मंजूबाई जैन गुरुदेव के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुये।

-कार्यक्रम का संयोजन करती हुई साध्वी समताश्री व धन्यवाद ज्ञापन करते हुये योगी अरुण तिवारी।

-एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी में मानव मंदिर गुरुकुल के बालक-बालिकायें मंगल-पाठ करते हुए साथ में हैं साध्वी समताश्री जी।

-एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी में मानव मंदिर की बालिकायें सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुईं।

–एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी में मानव मंदिर गुरुकुल के छात्रों द्वारा योग प्रस्तुति।

-गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये भक्त गण।

-इस शुभ अवसर पर सालाअर्पण कर पूज्य गुरुदेव से मंगल आशीर्वाद प्राप्त करते हुये श्री राजेंद्र जैन व उनकी धर्मपत्नी।

-बड़ा गाँव जैन तीर्थ में मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चे जल-क्रीड़ा का आनंद लेते हुये।

मानव मंदिर सुनाम पंजाब में एक्यूप्रेसर प्रशिक्षण व शोध संस्थान एव मानव मंदिर मिशन दिल्ली द्वारा तीन दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स बहुत ही सफल रहा कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ-

-एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण कैंप के सफल समापन पर साल और समृति चिह्न द्वारा डॉक्टर अजय पांडेय का सम्मान करते हुये मानव मंदिर सुनाम के पदाधिकारी गण- श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता, श्री जगदीश सिंगला, श्री अरुण जैन, श्री अशोक गुप्ता, श्री रोमेश जैन, श्री रविन्द्र चीमा, श्री बलविन्द्र भारद्वाज आदि।

-मानव मंदिर परिसर सुनाम में प्रशिक्षण कैंप की एक झलक।

-बड़ा गाँव जैन तीर्थ में साध्वी समताश्री के सानिध्य में मानव मंदिर के छात्रा-छात्रायें व कार्यकर्तागण।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

–ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया व ग्लोबल कनफडरेशन ऑफ ब्राह्मण समाज की तरफ़ से मानव मंदिर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र महाराज व अमेरिका से पधारे डॉक्टर श्रीकांत मिश्रा का सम्मान करते हुये श्री आर.डी. दीक्षित। श्री सुभाष चंद्र तिवारी व योगी अरुण तिवारी मंच संचालन करते हुये।

–समारोह को संबोधित करते हुये पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज।

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया